

1. प्रश्न - कविने माली-मालिन किसे और क्यों कहा है?

उत्तर - कविने कृष्ण को माली तथा श्री राधिका को मालिन कहा है। जिस तरह माली और मालिन अमरिणी फूलवारी की देखरेख करते हैं, और उन्हीं के प्रयास से वाटिका के विभिन्न प्रकार के फूल खिले रहते हैं उसी प्रकार श्री राधिका और कृष्ण के कारण ही प्रेमरूपी वाटिका में हमेशा अंगार के विभिन्न भाव पुष्प खिले रहते हैं जिनके सरस आकर्षण में सबके चित्त ~~विभुज~~ विभुज होते रहते हैं।

2. प्रश्न - प्रस्तुत दोहे का काव्य सौन्दर्य स्पष्ट करें।

उत्तर - प्रस्तुत दोहा में कवि की प्रेम-भक्ति की अभिव्यक्ति हुई है। 'प्रेम-अमरिणी' (प्रेम का रत्न) या प्रेम का धार। और 'प्रेम-वसन' (प्रेम का रंग) में अप्रमेया और रूपक निहित है। 'प्रेम-वाटिका' में रूपक अलंकार है। 'माली-मालिन' में उपमालंकार है। पूरा दोहा अर्थ स्तर पर उदाहरण का रचनाविधान करता है। सरल से दिखने वाले इस दोहा में व्यंग्य की प्रधानता है। कवि कहना चाहता है कि माली-मालिन के मृगप्रयास में जिस तरह वाटिका रंगों और सुगंधों से जीवंत और चित्राकर्षक बनी रहती है, उसी तरह श्री राधिका और श्री कृष्ण (मैदनद) की लीलाओं से प्रेमरूपी वाटिका को जीवंतता प्राप्त होती रहती है।

3. प्रश्न - कृष्ण को चोर क्यों कहा गया है? कवि का अभिप्राय स्पष्ट करें।

उत्तर - कविने कृष्ण को चोर के रूप में प्रस्तुत किया है। कृष्ण अपने स्वरूप से गोपियों के चित्त का हरण कर लेते हैं। जो भी कृष्ण के आकर्षक स्वरूप को देखता है, कृष्ण उसके मन और चित्त को चुरा लेता है, अर्थात् अपूर्व-अलौकिक सौन्दर्य ही ऐसा है, कि वह सबके मन को अपने वश में कर लेता है। दूसरों के चित्त (मन) को अपने वश में करने के कारण ही कृष्ण को चोर कहा गया है।

4. सर्वे में कवि की कैसी आकांक्षा प्रकट होती है? भावार्थ बताते हुए स्पष्ट करें।

5. उत्तर - प्रस्तुत सर्वे में कवि रसरत्न के भक्त हृदय की सत्त्विक अभिलाषा व्यक्त करने हुए कहते हैं कि कृष्ण भक्त के लिए नंद की गाम्-चराने में जो आनंद है उसकी समता आसिद्धियों और नवी निधियों से प्राप्त सुख नहीं कर सकता है। यह भौतिक एवं लौकिक सुख है, जो लोभ नंद की गाम्-चराने का सुख अलौकिक तथा लोकोत्तर है, यानी उल्लेख असीम आनंद है।

कवि रसरत्न के लिए कृष्ण भक्त से प्राप्त आनंद से बढ़कर इस दुनिया में कोई आनंद नहीं है। करोड़ों सोना-चौदरी के भव्य-भवनों से प्राप्त सुख प्राप्त करने की लालचों से प्राप्त सुख के समक्ष अल्पनाश्व और ~~निरुद्ध~~ निरुद्ध होता है। इस पंक्ति में भक्ति भाव का औचित्य अभिव्यक्त हुआ है। भावोत्कृष्टता के साथ ही इस पंक्ति में कव्यसीमा सौंद भी भ्रंशित हुआ है।